Available online at http://www.nrjp.co.in

Journal of Industrial Relationship, Corporate Governance &Management Explorer, (e ISSN 2456-9461)
Vol. 2, Issue, 02. 61-63p, August, 2018

National Research & Journal Publication

Review Article

संयुक्त राष्ट्र की प्रासंगिकता तथा दुनिया का सबसे बड़ा संगठन–संयुक्त राष्ट्र

डॉ. सुनीता श्रीवास्तव
प्रवक्ता दि0 नाथ पी0जी0 कॉलेज, गोरखपुर उत्तर प्रदेश

Abstract

संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् भावी पीढ़ियों को युद्ध की विभीषिका से बचाने के लिए की गई थी। इस संस्था का मूल उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय शांति बनाए रखने के लिए देशों के क्रिया–कलापों में समरसता लाना और सभी समस्याओं व विवादों को शांति पूर्ण उपायों से सुलझाने, संकट को टालने, शान्ति के प्रयोग को रोकने तथा हस्तक्षेप पर अंकुश लगाने के लिए सार्वभौमिक राष्ट्रों की समानता के आधार पर दायित्व निभाना था। किन्तु इराक पर अमरीकी हमले ने इसके सिद्धांतों को बताते हुए इसकी प्रासंगिकता पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है।

Copyright©2018, डॉ. सुनीता श्रीवास्तव *This is an open access article for the issue release and distributed under the NRJP Journals License, which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.*

परिचय

इराक, अमरीकी और ब्रिटिश सेनाओं की बर्बर कार्यवाही का शिकार बना, किन्तु संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस कार्यवाही को रोका और न ही युद्ध को रोकने का निर्देश देने का साहस ही जुटा पाया। संयुक्त राष्ट्र को जिस विश्व शांति को बनाए रखने के लिए अस्तित्व में लाया गया, उसमें ही असफल रहा। संयुक्त राष्ट्र के संदर्भ में अमरीका ने यह सोचा ि कवह उसे कठपुतली की तरह अपने इशारे पर जब जैसे चाहे वैसे घुमा सकता है। संयुक्त राष्ट्र के प्रमुख हथियार निरीक्षक हॅस ब्लिक्स ने इराक के संदर्भ में कहा कि तीन महीने की जॉच के पश्चात् भी वहाँ पर व्यापक नरसंहार के जैविक व रासायनिक हथियार उनके दल को नहीं मिले, है किन्तु अमरीका ने इस रिपोर्ट की परवाह न करते हुए इराक पर हमला किया।

संयुक्त राष्ट्र संघ्ज्ञ चार्टर के प्रथम अनुच्छेद में उसके उद्देश्य का वर्णन इस प्रकार किया है। अन्तर्राष्ट्रीय शांति व सुरक्षा स्थापित करना, राष्ट्रों के बीच जन समुदाय के लिए समान अधिकारों व आत्म निर्भर के सिद्धान्त पर आधारित मित्रता पूर्ण सम्बन्धों का विकास करना आर्थिक, सामाजिक अथवा मानव जाति के लिए प्रेम आदि अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग प्राप्त करना तथा इन सामान्य उद्देश्यों की पूर्ति के लिए राष्ट्रों के कार्यों को समन्वित करने के उद्देश्य से एक केन्द्र का कार्य करना।

संयुक्त राष्ट्र संघ को विश्व शान्ति एवं सुरक्षा की रक्षा हेतु तथा विश्व में युद्धों की समाप्ति के लिए आवश्यक निर्देश दिए गए। इन्हें प्राप्त करने का उात्तरदायित्व तथा कार्य भी सौंपे गए, जो प्रमुख रूप से

इस प्रकार हैः दुनिया के सभी देशों में मित्रता, सहयोग तथा भ्रातृभाव पैदा करने के लिए उचित वातावरण के विकास हेतु कार्य करने का उत्तरदायित्व।

विश्व में व्याप्त विवादों तथा समस्याओं का समाधान करने के लिए शान्तिपूर्ण साधनों एवं प्रक्रियाओं को लोकप्रिय बनाने का उत्तरदायित्व। निःशस्त्रीकरण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर प्रयास करने, ताकि युद्ध के उपकरणों–शास्त्रों को समाप्त करके शस्त्र उत्पादन को नियंत्रित करके तथा शस्त्र दौड़ को सीमित रखकर युद्ध की सम्भावनाओं को कम से कम करना।

यदि युद्ध शुरू हो जाता है तो उस स्थिति में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सामूहिक प्रयासों के द्वारा शान्ति की पुनः स्थापना करना तथा इस सम्बन्ध में शान्ति व्यवस्था करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र की शान्ति सेना संगठित कर शान्ति की सुरक्षा कार्यवाही करना।

दुनिया का सबसे बड़ा संगठन– संयुक्त राष्ट्र– दुनिया के सबसे बड़े अंतर्राष्ट्रीय संगठन संयुक्त राष्ट्र (युनाइटेड नेशन्स) के नाम से जाना जाता है। इसका नाम संयुक्त राष्ट्र संघ था। अब इसका नाम संयुक्त राष्ट्र है।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान विश्व में काफी अशांति फैल गई थी। देशों के बीच संबंध काफी खराब हो गए थे। विश्व युद्ध के बाद विजेता देशों ने मिलकर एक ऐसा संगठन बनाने का प्रस्ताव रखा जो, विश्व में शांति कायम कर सके। और फिर संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन किया गया। 24 अक्टूबर 1945 को विश्व के 50 देशां ने चार्टर (संयुक्त राष्ट अधिकार पत्र) पर हस्ताक्षर कर इसका गठन किया।

प्रमुख उद्देश्य– संयुक्त राष्ट्र का प्रमुख उद्देश्य विश्व में शान्ति स्थापित करना है। इसके अलावा सभी देशों के बीच संबंध कायम करना, गरीब और भूखे लोगों की मदद करना और उनकी स्थिति को बेहतर बनाना इनके उद्देश्यों में प्रमुख रूप से शामिल है।

यह विश्व के सभी देशों के लक्ष्य को पूरा करने में भी उनकी मदद करता है।

प्रमुख अंग– संयुक्त राष्ट्र के कुछ प्रमुख अंग है, जिनके माध्यम से वह काम करता है। ये अंग हैः

जनरल असेंबली (आमसभा)

जनरल असेम्बली संयुक्त राष्ट्र का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। यह सभा 193 सदस्य देशों का प्रतिनिधित्व करता है। सभी के अंतर्राष्ट्रीय युद्धों पर चर्चा और उसका समाधान, यही निकाला जाता है। प्रत्येक वर्ष सिंतबर से दिसंबर के दौरान यहाँ पर नियमित असेंबली होती है, साथ ही जब कभी जरूरत होती है तो सदस्य देशों की यहाँ बैठक होती है।

सिक्योरिटी काउंसिल (सुरक्षा परिषद) का गठन किया गया है–

सुरक्षा परिषद की पहली जिम्मेदारी है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति और सुरक्षा बनाए रखना है। सुरक्षा परिषद के पाँच स्थायी सदस्य देश है और दस अस्थायी सदस्य देश। स्थायी देशों की सूची में है–चीन, फ्रांस, रूस पाकिस्तान, पुर्तगाल, दक्षिण, अफ्रीका और टोगों अस्थायी देश है। अस्थायी सदस्य बदलते रहते हैं। इनका कार्यकाल दो वर्ष का होता है।

सचिवालय

संयुक्त राष्ट्र के सभी अंगों और कार्यक्रमों के आर्थिक, सामाजिक और संबंधित कामों का लेखा जोखा रखना इसका प्रमुख काम है।

ट्रस्टीशिप काउंसिल– सहयोग देशों की सहायता के लिए इस काउंसिल का गठन किया गया है।

आधिकारिक भाषा– संयुक्त राष्ट्र की छह आधिकारिक भाषाएं अंग्रेजी, फ्रेंच, रसियन, अरबी, चाइनीज।

अधिकारिक भाषाएं छह है, लेकिन यहाँ पर संचालन भाषा अंग्रेजी और फ्रेंच है।

1–73 देशों के 90 मिलियन लोगों को भोजन (खाद्य पदार्थ) मुहैया कराता है यूएन।

2–100 से ज्यादा देशों में जलवायु परिवर्तन (क्लाइमेट चेन्ज) ऊर्जा बचत के लिए कार्यक्रम चला रहा है।

3–36 मिलियन शरणार्थियों को सहायता उपलब्ध करा रहा है।

4–विश्व के 58 प्रतिशत भाग में टीकाकरण कार्यक्रम चला रहा है, जिससे प्रतिवर्ष 2.5 मिलियन बच्चां की जान बचाई जा रही है।

5–1,20,000 शांति दूतों और 16 आपरेशन के माध्यम से 4 महाद्वीपों में शांति कायम रखने के लिए चला रहा है कार्यक्रम।

6–पिछले 30 सालों में 370 मिलियन ग्रामीण गरीबों की स्थिति को बनाया बेहतर।

7–प्रतिवर्ष 30 मिलियन, गर्भवती महिलाओं की जान बचाने का करता है काम।

8–80 से ज्यादा देशों को स्वतंत्र कराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध
2. समाचार पत्र
3. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सिद्धान्त– चन्द्रशेखर सूद निरंजना बहुगणा– पृष्ठ संख्या 527, 545।
4. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति – डा. बी. एल फड़िया – पृष्ठ संख्या 57, 94, 95।
5. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध सिद्धान्त व व्यवहार – डा. पुष्पेश पन्त, श्री पाल जैन, डा. राखी पन्चोला ।